डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

बुलेटिन संख्या–16
दिनांक– मंगलवार, 24 फरवरी, 2026

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय बेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 28.0 एवं 10.7 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 94 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 48 प्रतिशत, हवा की औसत गति 5.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 4.2 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 7.4 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 15.7 एवं दोपहर में 30.4 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(25 फरवरी–01 मार्च, 2026)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 25 फरवरी–01 मार्च, 2026 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान साफ तथा मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 28 से 31 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 13 से 16 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- औसतन 2–4 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्यतः पछिया हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 80 प्रतिशत तथा दोपहर में 25 से 30 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- तापमान में वृद्धि के कारण अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान सामान्य से अधिक रहने की संभावना है, जिससे गेहूं की फसल को नुकसान हो सकता है। अतः किसान भाई खेत में नियमित सिंचाई कर पर्याप्त नमी बनाए रखें, ताकि अधिक तापमान का दुष्प्रभाव कम हो और उत्पादन में कमी न आए। जो गेहूं की फसल वर्तमान में दुग्धावस्था में है, उसमें उच्च तापमान के प्रभाव को कम करने के लिए पोटैशियम 10–2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- इस मौसम में लाही कीट का प्रकोप सरसों, पिछात फूलगोभी, पत्तागोभी एवं अन्य सब्जियों में बढ़ सकता है। अतः फसल की नियमित निगरानी करें। यदि प्रकोप दिखाई दे तो डाईमेथोएट 30 EC दवा का 1.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर समान रूप से छिड़काव करें।
- अरहर की फसल में फल–छेदक कीट के पिल्लू फलियों में प्रवेश कर बीजों को खा जाते हैं, जिससे उपज में भारी कमी आती है। इस कीट की नियमित निगरानी करें तथा प्रकोप की स्थिति में करताप हाइड्रोक्लोराइड 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- गरमा मूंग एवं उरद की बुआई के लिए खेत की अच्छी तैयारी करें। बुआई से पूर्व 20 किग्रा नत्रजन, 45 किग्रा स्फुर, 20 किग्रा पोटाश तथा 20 किग्रा गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। मूंग के लिए पूसा विशाल, सम्राट, SML–668, HUM–16 एवं सोना तथा उरद के लिए पंत उरद–19, पंत उरद–31, नवीन एवं उत्तरा किस्में उपयुक्त हैं। छोटे दाने वाली किस्मों के लिए 20–25 किग्रा तथा बड़े दाने वाली किस्मों के लिए 30–35 किग्रा बीज प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई से पूर्व प्रमाणित स्रोत से बीज की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- गरमा मौसम की सब्जियों की बुआई करें तथा 150–200 क्विंटल गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में अच्छी तरह मिलाएं। कटुआ (कजरा) पिल्लू से बचाव हेतु जुताई के समय क्लोरपायरीफॉस 20 EC दवा 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलोग्राम बालू में मिलाकर प्रयोग करें। फसल में समय–समय पर निराई–गुड़ाई एवं सिंचाई अवश्य करें।
- सूर्यमुखी की बुआई के लिए मौसम अनुकूल है। बुआई से पूर्व 100 क्विंटल कम्पोस्ट, 30 किग्रा नत्रजन, 80 किग्रा स्फुर एवं 40 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। संकर किस्मों के लिए 5 किग्रा तथा संकुल किस्मों के लिए 8 किग्रा बीज प्रति हेक्टेयर पर्याप्त है। बुआई के समय 30–40 किग्रा गंधक प्रति हेक्टेयर का प्रयोग लाभकारी रहेगा।
- बसंतकालीन मक्का की बुआई करें। जुताई से पूर्व प्रति हेक्टेयर 15–20 टन गोबर की खाद, 40 किग्रा नत्रजन, 40 किग्रा स्फुर एवं 30 किग्रा पोटाश का प्रयोग करें। सुवान, देवकी, गंगा–11, शक्तिमान–1 एवं 2 किस्में उपयुक्त हैं। बीज दर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर रखें तथा प्रति किलोग्राम बीज को 2.5 ग्राम थीरम या कैप्टान से उपचारित करें। दाना बनने की अवस्था में पर्याप्त नमी बनाए रखें।
- इस मौसम में प्याज की फसल में थ्रिप्स का प्रकोप हो सकता है। नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफॉस 50 EC 1.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी या इमिडाक्लोप्रिड 1.0 मि.ली. प्रति 4 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। बेहतर परिणाम के लिए टीपोल 1.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी घोल में मिलाएं।
- चारा उत्पादन हेतु ज्वार, मकई एवं बाजरा की बुआई करें। जई, बरसीम एवं लूसर्न की फसल की कटाई 25–30 दिन के अंतराल पर करें। प्रत्येक कटाई के बाद 10 किग्रा नत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें।
- ठंड समाप्त होने पर गाय एवं बछियां गर्मी (मद) में आती हैं। सफल गर्भाधान के लिए संतुलित आहार एवं पर्याप्त हरा चारा दें तथा प्रतिदिन 50 ग्राम मिनरल मिक्सचर खिलाएं। खुरपका–मुंहपका (FMD) रोग का टीकाकरण अवश्य कराएं। जिन पशुओं को जुलाई–अगस्त में टीका लगा है, उन्हें पुनः टीका लगवाएं तथा टीकाकरण से पूर्व आंतरिक एवं बाह्य परजीवी नाशक दवा अवश्य दें।

आज का अधिकतम तापमानः 28.6 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.4 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 13.5 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.1 डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी